اکتوبر ۲۰۱۱ء

ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تبارَکَ وَتعَالیٰ قَدْ جاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب





نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

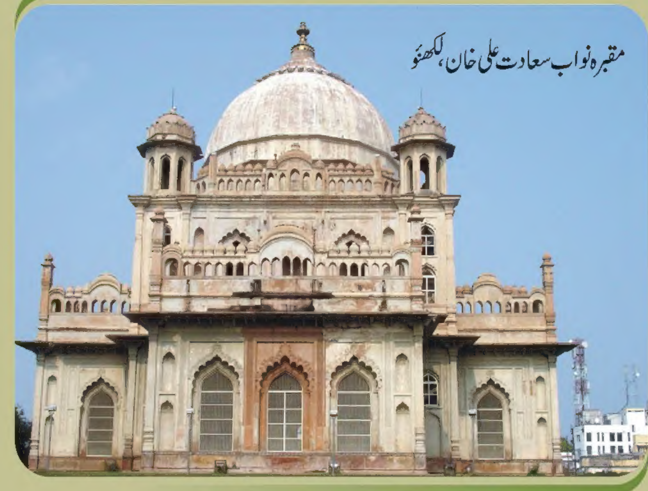
SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

October 2011





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 8 — अंक 4

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अक्टूबर–2011

शुआ–ए–अमल

"लखनऊ"

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ – 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/- Annual 200/-



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

अक्टूबर 2011[ई०]
ज़ीक़ादतिल हराम 1432[हि०]

महान अन्तर्राष्ट्रीय शहीद

हुसैन(अ०) बिन अली(अ०)

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादकः हाशिम रज़ा रिज़वी

आज जबकि कानों में पक्षपातीय नारों की आवाज़ गूँजी हुई है, आँखें इसी प्रकार के दृश्य देखने की आदी हैं और दिल व दिमाग़ पार्टी बन्दी की भावनाओं से भरे हुए हैं, यह कहना कि हुसैन का व्यक्तित्व पार्टीबन्दियों से कहीं ऊँचा है सरसरी निगाह में ग़लत मालूम होगा जबकि स्पष्ट है कि हुसैन के व्यक्तित्व का सम्बन्ध एक ख़ास सम्प्रदाय से ही है। निस्संदेह हुसैन का सम्बन्ध एक ख़ास सम्प्रदाय से है इस अर्थ में कि हुसैन मुसलमानों में पैदा हुए और वह इस्लाम के पैग़म्बर के नाती थे लेकिन जिस प्रकार कोई नदी यद्यपि किसी ख़ास भू-भाग से निकलती हो फिर भी जहाँ-जहाँ पहुँचती है हर जाति को लाभ देती है जिस प्रकार सूर्य पूरब से निकलने पर भी पश्चिम के भी भागों को अपनी किरणों से प्रकाशित कर देता है, जिस तरह से बादल किसी एक दिशा से उठने पर भी किसी दूसरी दिशा की सूखी ज़मीन को पानी देने से नहीं रुकते ठीक उसी तरह इमाम हुसैन का बनी हाशिम के ख़ानदान में होना अरब देश और अरब जाति के दूसरे वन्शों को उनसे बिलग कर देने का कारण नहीं हो सकता।

दुनिया में विभिन्न धर्म हैं लेकिन अपनी पारस्परिक विभिन्ताओं के बावजूद कुछ अच्छाइयाँ ऐसी हैं जिनको सब धर्म ही अच्छाइयाँ ही समझते हैं और बहुत सी बुराइयाँ हैं जो सबके निकट बुराइयाँ हैं यहाँ तक कि जब बुरे आदमी भी बुराइयाँ करते हैं तो अच्छाई के नाम से। हर झूट सच के नाम से बोला जाता है। हर बेईमानी ईमानदारी के नाम से की जाती है। और यह बुराई को अच्छा कह कर करना ही इस का प्रमाण है कि बुरा आदमी भी अपने इस कार्य को बुरा ही समझता है। इसलिए मेरा विचार है कि अगर दुनिया में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था स्थापित की जाए जिसमें सब धर्मों के अधिकारी सम्मिलित हों और उसका उद्देश्य मनुष्य जाति में उन अच्छाईयों का प्रचार करना हो जो सब ही धर्मों में अच्छी मानी गई हों और उन बुराइयों से रोकना हो जो सब के निकट बुरी हैं।

जिस प्रकार उच्च सामाजिक सिद्धान्त किसी एक सम्प्रदाय में सीमित नहीं हैं उसी तरह किसी ऐसे उच्च सिद्धान्त की शिक्षा देने वालों का व्यक्तित्व केवल किसी एक सम्प्रदाय से सम्बन्धित नहीं हो सकता। इमाम हुसैन ने एक ऐसा उच्च उदाहरण हमारे सामने रख दिया है जो हर प्रकार से हर सम्प्रदाय के लिए पथ-प्रदर्शक हो सकता है और वह है हुसैन का वह जिहाद जो उन्होंने खुद अपनी जाति वालों की ख़राबियों को दूर करने के लिए किया। हुसैन का जिहाद पक्षपात और जाति भेद से ऊँचा और परे न होता अगर वह किसी दूसरी जाति या सम्प्रदाय के विरूद्ध होता जब कि उसे दूसरे सम्प्रदाय या जाति के लोग इमाम हुसैन के मानसिक तौर पर विरूद्ध हो सकते थे लेकिन इमाम हुसैन अपनी ही जाति वालों को सुधारने के लिए लड़े थे।

हम देखते हैं कि आज निन्नानवे प्रतिशत लोग दूसरों की ख़राबियों को बढ़ा-बढ़ा कर बयान करना चाहते हैं और अपनों की ख़राबियों की ओर से आँख मूँद लेना चाहते हैं। उस समय भी जब हम यह मान भी लेते

हैं कि हमारे सम्प्रदाय या जाति वालों ने किसी दूसरे के साथ अन्याय या अत्याचार किया है तो हम यही कहना चाहते हैं कि एक तो हमारी जाति ने जो कुछ बुराई की है वह उस से कम है जो दूसरों ने की है और दूसरे यह कि इधर से जो कुछ हुआ वह केवल जवाब में हुआ। फिर जब लीडरों का यह प्रयत्न हो तो जनता पर इसका क्या प्रभाव होगा? इसका फल यह होता है कि हर जाति के लोग यह समझने लगते हैं कि जो कुछ उन्होंने किया वह बुरा होता मगर अब इसलिए बुरा नहीं है कि जवाबी तौर पर किया या यह कि जो कुछ किया वह दूसरी ओर की बुराईयों से कम है और इसलिए दोषपूर्ण नहीं है। इस भावना का नतीजा यह होता है कि साधारण जनता के व्यक्ति बदला चुकाने के लिए और ज़्यादा सख़्ती और अत्याचार पर उतर आते हैं और उसके बाद बदला लेने की कार्रवाइयाँ दोनों तरफ़ से शुरु हो जाती हैं और एक न ख़त्म होने वाली मार-काट का सिलसिला बन्ध जाता है।

इमाम हुसैन की प्रयोगात्मक शिक्षा यह है कि तुम दूसरे की बुराइयाँ खोजने की जगह खुद अपनी जाति और संस्था की ख़राबियों की ओर ध्यान दो और उन्हीं को सबसे अधिक शोचनीय समझो। सच्चे उपदेशक का यह कर्तव्य है कि वह जनता को उनकी ग़लतियों की ओर ध्यान दिलाए और दूसरे सम्प्रदाय की बुराइयों के उल्लेख को मामूली समझकर उनको इतना महत्व न दे ताकि लोगों की दृष्टि अपनी ग़लतियों पर पड़े और वह अपने सुधार की ओर ध्यान दें। कितने आश्चर्य और खेद की बात है कि धर्म के मानने वाले एक दूसरे से बुराइयों में मुक़ाबला करते हैं अर्थात यह चाहते हैं कि दूसरा बुराई में बढ़ा न रहने पाए, यदि हमारी ओर से कोई कमी रह गई हो तो हम उसको पूरी कर दें। यदि धर्म का भाव विचारों में भली-भांति पाया जाता जो अच्छाइयों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की भांति पाया जाता तो अच्छाइयों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश की जाती। सच्ची बात यह है कि साधारणतः लोग धर्म (मत) को एक सच्चे सिद्धान्त के रूप में (पद पर) नहीं मानते बल्कि इस लिए मानते हैं कि वे उस धर्म के मानने वालों के घर में पैदा हुए। इसलिए मानसिक दृष्टि से देखा जाए तो वे दिल से धर्म हीन ही हैं।

अपने धर्म से ऐसे लोगों को ऐसा ही प्रेम है जैसा अपने देश, अपनी सन्तान, अपने घर या अपने किसी मित्र से होता है। यह अपने होने के आधार पर जो प्रेम होता है वह वास्तव में खुद अपना ही प्रेम है, बस इसी तरह से उनको अपने धर्म से भी प्रेम है, इसलिए उनका धार्मिक युद्ध भी इसी आधार पर होता है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को उसको उसके हक़ से कम ही देना चाहता है अतः संघर्ष, फ़साद और रक्तपात की सूरतें पैदा होती हैं। सुधारकों का कर्तव्य यह है कि वे अपनी जाति के ग़लत रास्ते पर जाने और बुरे चलन के विरूद्ध घोर संघर्ष करें चाहे इस रास्ते में उनकी जान भी काम आए। इसी को इमाम हुसैन ने सर्वोच्च शिखर पर व्यवहारिक रूप से प्रकट किया।

धर्म ने जो सिद्धान्त हमको बताया है वह यह है कि यदि हर एक को दूसरे के मुक़ाबले में उच्ता प्राप्त करना हो तो चाहिए कि वह अपने वास्तविक कर्म को उस से ऊँचा रक्खे। इस तरह अगर मुक़ाबले भी दो पक्षों में हों तो इस बात देखें कि कौन दूसरे के साथ एहसान ज़्यादा करता है। इसके नतीजे में कभी टकराव नहीं हो सकता।

इस्लाम ने जो शिक्षा दी है उसका एक साधारण उदाहरण देता हूँ। व्यापार में तराज़ू से तौलने वाली चीज़ों के सम्बन्ध में आज्ञा दी गई है कि यदि तुम खुद तौल कर बेच रहे हो तो कुछ ज़्यादा देने की कोशिश किया करो और अगर तुम ख़रीदने जाओ और दुकानदार तुम से तौलने को कह दे तो कुछ कम ही लेने की कोशिश करो। इसके बाद क्या मोल-तोल में कोई झगड़ा हो सकता है? अब अगर दो जातियों के बीच कोई मामला हो और वह इसी दृष्टिकोण से ज़मीन बांटे कि चाहे दूसरी ओर ज़्यादा ज़मीन चली जाए मगर उस दूसरे पक्ष का हक़ मारा न जाए तो फिर कोई झगड़ा या टकराव कैसे सम्भव है?

यज़ीद ने हुसैन से बैअत (किसी को ख़लीफ़ा यानी धार्मिक तौर पर हाकिम मान लेना) चाही और हुसैन ने इनकार किया। हुसैन को बैअत करने से इतना

इनकार क्यों था? इस सवाल का जवाब इसी के साथ के एक दूसरे सवाल के जवाब में मिल सकता है। आख़िर यज़ीद को हुसैन से बैबत लेने पर इतनी ज़िद क्यों थी? बस जिस लिए यज़ीद इतनी सख़्ती से बैअत लेने पर अड़ा हुआ था उसी लिए हुसैन भी बैअत करने से इतनी सख़्ती से इनकार करते थे। यज़ीद बैअत लेने का इतना इच्छुक इसलिए था कि वह समझता था कि उसने इस्लामी शास्त्र का इतना खुला हुआ विरोध किया है, और इस्लाम के इतने मोटे-मोटे उसूलों को तोड़ा है कि जिसके कारण उसको यक़ीन था कि इधर लोगों के दिमाग़ों से रिश्वत (घूस) का नशा ज़रा भी कम हुआ, उधर चमकती हुई तलवारों की चमक आँख से ज़रा ओझल हुई उधर मोटी समझ का मुसलमान भी केवल एक ही बार ध्यान देने से समझ लेगा कि यज़ीद सच्चा ख़लीफ़ा नहीं हो सकता। यज़ीद को आवश्यकता थी कि वह अपने सच्चे ख़लीफ़ा होने के पक्ष में इस्लामी शास्त्र के वास्तविक संरक्षक (यानी इमाम हुसैन) से सनद ले ली जाए ताकि अगर कभी मुसलमान जागे तो फ़ौरन उस से कह दिया जाए कि अगर सरकार इस के योग्य न होती तो रसूल के नाती, हुसैन क्यों बैअत करते? यह यज़ीद की मूर्खता थी कि उसने ऐसा सोचा भी क्योंकि हुसैन बैअत कर लेंगे। हुसैन अगर बैअत कर लेते तो सदा के लिए रहती दुनिया तक असलियत और वास्तविकता पर पर्दा पड़ जाता। इसलिए हुसैन को बैअत से इनकार करना आवश्यक था।

इस तरह हुसैन न दो नतीजे पैदा किये.... दो सिद्धान्तों को जन्म दिया, एक मुसलमानों के लिए और एक दूसरों के लिए। मुसलमानों के लिए आपने ये उसूल अपने ख़ून की लाली से लिख दिया कि धर्म शास्त्र शासक के आधीन और उसके चलन का पाबन्द नहीं होता इसलिए कभी शास्त्र के उसूलों को शासकों के चाल-चलन के द्वारा समझने की कोशिश न करना। और दूसरे सम्प्रदायों के लिए यह कि अगर तुमको इस्लामी सभ्यता, इस्लामी शिक्षा, और इस्लामी व्यवहार का अध्यन करना हो तो किसी दमिश्क़, सीरिया या हमरा या ख़ज़रा के महलों में न ढूँढना बल्कि मदीना के उन टूटे हुए खंडरों को देखना जहाँ फटे हुए पर्दे, और कच्ची दीवारें दिखाई देती हैं। इस तरह हुसैन ने सदा के लिए यज़ीद और उसी तरह के लोगों को उनके असली रूप में प्रकट कर दिया और किसी भ्रम के बाक़ी रहने की सम्भाविकता को ख़त्म कर दिया।

हुसैन का यह जिहाद जो अपनी ही जाति के लोगों के ख़िलाफ़ था अपनी क़िस्म का अलग था। वह इस्लामी जिहाद जो दूसरों के विरूद्ध लड़ा जाए उस में कुछ शर्तें होती हैं, जैसे यह कि जिहाद उस समय करना चाहिए जब जीतने की आशा हो, संख्या काफ़ी हो, सैनिकों की आयु की भी एक सीमा नियुक्त है कि इतनी आयु से कम और इनती से अधिक न हो। इसी प्रकार और भी पाबन्दियाँ है। लेकिन हुसैन ने जो जिहाद किया वह उस जिहाद से विभिन्न था। क़ुरआन में आदेश मिलता है कि 20 मुसलमान, 200 का मुक़ाबला करें लेकिन जब प्रयोग में वे उस कसौटी पर पूरे न उतरे तो कहा गया कि अच्छा सौ मुसलमान दो सौ का मुक़ाबला करें। वह पहला अनुपात ही जो क़ुरआन ने नियुक्त किया था लोगों के अमल (कार्य) की कमज़ोरी के कारण अप्रयोगीय समझा गया। अधिक से अधिक, बीस और दो सौ का अनुपात था अर्थात दस गुने के हिसाब से, लेकिन कर्बला में जो जिहाद किया गया था उसमें एक और 72, दूसरी ओर कम से कम तीस हज़ार, इनमें जो अन्तर है कहीं ज़्यादा है फिर जिहाद में संख्या का काफी होना ज़रूरी है। कर्बला की लड़ाई में संख्या को बढ़ाने के बजाए हुसैन घटाना चाहते हैं। रास्ते में जितने लोग किसी लालच के कारण साथ हो लिये थे उनसे इमाम ने हज़रत मुस्लिम की शहादत (बलिदान) की की ख़बर सुनने के बाद कहा कि "मैं किसी राजनीतिक युद्ध के लिए नहीं जा रहा हूँ, जो लोग किसी उम्मीद की वजह से साथ हों वह वापस जाएं।" और इस तरह बहुत से लोग चले गए। उसके बाद कर्बला में भी आख़िरी रात को उन्होंने अपने साथ के लोगों से कहा, "तुम में से जो जाना चाहे ख़ुशी से चला जाए।" फिर आयु की सीमा जो नियुक्ति है, वह भी यहाँ तोड़ दी गई है। एक ओर तो हबीब की आयु अस्सी वर्ष और दूसरी ओर छोटे-छोटे बच्चे यहाँ तक कि

(शेष..... पेज 7 पर)

हज के मौक़े पर रसूलुल्लाह (स०) का ख़ुतबा

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद आसिफ़ अब्बास नौगाँवी

रसूले इस्लाम[स०] का मक़ामे अरफ़ात में क़याम था। ये 10 हिजरी में हज्जतुल विदा यानी हज़रत[स०] के आख़री हज का ज़माना था अपने कम्मल के ख़ेमे से निकल कर शहंशाहे दो आलम मैदान की तरफ़ अपनी मशहूर ऊँटनी क़सवा पर सवार होकर तशरीफ़ लाए और वह अज़ीम ख़ुतबा इरशाद किया जो क़यामत तक दुनिया वालों को याद रहेगा सामने आदमियों का एक सैलाब था आपने फ़रमाया जिसका ख़ुलासा यह हैः-

आगाह हो जाओ! जाहिलियत यानी इस्लाम की रौशनी से पहले के तमाम दस्तूर और तरीक़े मेरे दोनों पैरों के नीचे हैं। इन अलफ़ाज़ के साथ आपने जाहिलियत के ज़माने की सारी बेहूदा रसमों को मिटाने का एलान किया। फिर इंसान की तरक़्क़ी की राह में एक बहुत बड़ी चीज़ हायल थी और वह ख़ानदान, नस्ल, रंग, दौलत व हुकूमत, ज़बान और क़ौम व मुल्क का फ़र्क़ था आज तमाम इम्तियाज़ और हर क़िस्म की तफ़रीक़ ख़त्म कर दी गई।

पैग़म्बरे अकरम[स०] ने इरशाद फ़रमाया लोगो! बेशक तुम्हारा परवरदिगार एक है और बेशक तुम्हारा बाप एक है। (यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम) हाँ अरबी को अजमी पर और अजमी को अरबी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़वा के सबब, आपने फ़रमाया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और तमाम मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं। तुम्हारे ग़ुलाम! तुम्हारे ग़ुलाम! जो ख़ुद खाओ वही उनको खिलाओ और जो ख़ुद पहनो वही उनको पहनाओ।

अरबों में क़दीम ज़माने से यह दस्तूर चला आता था कि किसी घराने का कोई आदमी अगर क़त्ल कर दिया जाता था तो उसका इंतेक़ाम लेना उनका ख़ानदानी फ़र्ज़ बन जाता था जिसका नतीजा यह था कि बरसों आपस में लड़ाईयाँ जारी रहती थीं और यह सिलसिला कभी ख़त्म होने को न आता था और इस वजह से हर तरफ़ बदअमनी और फ़सादात फैलते रहते थे रसूले अकरम[स०] ने इसके मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया, जाहिलियत की ज़माने के तमाम ख़ून यानी उनके इंतेक़ाम अब बातिल हो गए। और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ख़ून यानी रबीआ बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब के बेटे का ख़ून बातिल करता हूँ। मतलब यह था कि अब उसका कोई इंतेक़ाम न लिया जायगा। रबीआ जो आंहज़रत[स०] के चचाज़ाद भाई थे उनका दूध पीता बच्चा जिसका नाम एयास मशहूर है वह क़बीला बनी साद में परवरिश पा रहा था कि क़बीला हुज़ैल के किसी शख़्स ने उसको क़त्ल कर डाला। ख़ुद रबीआ बिन हारिस ज़मान-ए-रिसालतमआब के बाद तक ज़िन्दा रहे, और 23 हिजरी में वफ़ात पाई।

इसी तरह आप ने ज़मान-ए-जाहिलियत के सभी सूद के हिसाब भी बातिल कर दिये और एलान किया कि सबसे पहले मैं अपने चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के इस तरह के सारे मुतालबात बातिल करता हूँ।

इन बातों के अलावा उस वक़्त तक औरतों को अपने जायदाद की तरह समझा जाता था। रसूले इस्लाम[स०] ने इस अज़ीम और यादगार ख़ुतबे में औरतों के हुक़ूक़ से लोगों को आगाह कर दिया और फ़रमाया, ''औरतों के मामले में ख़ुदा से डरो, तुम्हारा औरतों पर हक़ है

और औरतों का तुम पर हक़ है।"

सब लोग जानते हैं कि इस्लाम से पहले अरब क़ौम में माल और जान की कोई क़ीमत न थी लूट और क़त्ल का बाज़ार गर्म रहता था जो शख़्स जिस किसी का माल चाहता था छीन लेता था और जिसको चाहता था मार डालता था कोई इंसाफ़ था और न कोई क़ानूनी निज़ाम था जिस से कमज़ोरों की जानों और उनके माल की हिफ़ाज़त की जा सकती। अम्नो सलामती के इस अज़ीम पैग़म्बर ने अपनी इस इस्लाह व हिदायत से भरी हुई तक़रीर में फ़रमाया तुम्हारे ख़ून और तुम्हारे माल उसी तरह मोहतरम हैं जिस तरह यह दिन (दसवीं ज़िलहिज्जह) इस महीने में और इस शहर में हराम है यानी मोहतरम है। मतलब यह था कि अब तुम्हारे ख़ून बग़ैर शरई और क़ानूनी जवाज़ के नहीं बहाए जा सकते और न कोई किसी का माल नाहक़ तरीक़े पर ले सकता है वरना वह बड़ा हो या छोटा हो हाकिम हो महकूम हो। सरदारे क़बीला हो या मामूली आदमी हो क़ानून की पकड़ से बच न सकेगा और उस सज़ा का मुस्तहक़ होगा जो उसके लिए मुक़र्रर कर दी गई है।

इसके बाद सरदारे अम्बिया ने दूसरे अहकामे शरीअत की तालीम दी। फिर हज़ारहा इंसानों के मजमे से फ़रमाया, तुम से ख़ुदा के यहाँ मेरी निस्बत दरयाफ़्त किया जायेगा तो तुम क्या जवाब दोगे?

सहाबा ने अर्ज़ की हम इसका यह जवाब देंगे कि आप ने अल्लाह का हुक्म और पैग़ाम हम तक पहुँचा दिया और अपने फ़र्ज़ को अदा कर दिया।

यह सुन कर हुज़ूरे अनवर ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया "ऐ ख़ुदा तू गवाह रहना"।

जिस वक़्त सरकारे दो आलम यह यादगार ख़ुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे और ख़ुदाई अहकाम पहुँचा रहे थे उस वक़्त बजाए लाखों रुपये के तख़्ते शाही या क़ीमती शाहाना मसनद के हुज़ूर एक मामूली से फ़र्श पर बैठे हुए थे जो आपकी ऊँटनी पर पड़ा हुआ था।

शेष...... महान अन्तर्राष्ट्रीय शहीद

छः महीने का अली असग़र भी रणक्षेत्र में लाया गया।

इस से मालूम हुआ कि दूसरों के साथ जिहाद करने में जो शर्तें हैं वह अपनों से जिहाद करने में उनका भी ख़याल नहीं किया गया। बल्कि तमाम कड़ी से कड़ी मुसीबतें इस सम्बन्ध में सही गईं।

इमाम हुसैन ने दुनिया को जो सार्वलौकिक मानवी कर्तव्यों की शिक्षा दी है वह आधुनिक काल में भूले हुए पुरुषार्थ की याद दिलाने के लिए काफ़ी है। पानी रसद (युझ सामग्री) का सबसे अधिक महत्वपूर्ण सामान होने के नाते सब से अधिक क़ीमती और आवश्यक था और दुश्मन को पानी पिलाकर ताक़त देना प्रत्यक्ष रूप से अपने को कमज़ोर करना है लेकिन इमाम हुसैन ने हुर की सेना को पानी पिला कर प्रकट किया कि यद्यपि वे दुश्मन थे मगर मानवजाति के ही व्यक्ति थे और प्यासे थे इसलिए पानी उनसे बचा नहीं रक्खा जा सकता। यह नहीं कि केवल हुक्म दे दिया हो जैसा कि अधिक्तर लीडर करते हैं कि ज़बानी शिक्षा देते हैं और अगर उस पर अमल न किया गया तो यह कहते हैं कि हमने तो कह दिया था पर पार्टी वालों ने कहना न माना। बल्कि इस सच्चे पथ-प्रर्दशक की शान तो यह थी कि खुद कुर्सी बिछाकर अपने सामने पानी पिलवाने लगे। निस्सन्देह इमाम हुसैन के साथी वही करते जो वह आज्ञा देते लेकिन इमाम हुसैन ने खुद अपने कर्तव्य का पालन भी करना आवश्यक जाना।

अली बिन तआन मुहारिबी (जो हुर की फ़ौज के साथ आया था) कहता है कि "मैं बहुत प्यास था। हुसैन ने इस बात को ज्ञात किया और कहा कि 'ऐ शख़्स उस ऊँट पा पानी है पली ले' मैं गया लेकिन प्यास की तेज़ी के कारण मश्क का दहाना अपने मुँह से ठीक से लगा न सका और पानी गिरने लगा। हुसैन खुद उठे ओर मश्क का दहाना ठीक करके मुझे पानी पिलाया।"

यह, और इसी प्रकार की दूसरी बहुत सी शिक्षाएं हैं, जिनके आधार पर हम यह कहते हैं कि "हुसैन का व्यक्तित्व, तमाम पक्षपातों और जाति भेदों से ऊँचा है।"

इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

(20)

कुछ दिनों पहले ईरान में एक लड़की के शादी से इनकार पर ग़ुस्सा होकर शादी के ख़्वाहिशमंद नौजवान ने लड़की के चेहरे पर तेज़ाब डाल दिया, जिस से उसकी दोनों आँखें बर्बाद हो गईं। इस्लामी अदालत में मुक़दमा चला। लड़की की ज़िद थी कि इस्लामी क़ानून के मुताबिक़ मुझे इजाज़त दी जाए कि मैं भी बदले के तौर पर लड़के की दोनों आँखों की रौशनी छीन लूँ। इस्लामी अदालत ने लड़की को इजाज़त दी, मगर इस ताकीद के साथ कि अगर माफ़ कर दे तो बेहतर है। पूरी दुनिया की मीडिया ने आफ़त मचाना शुरु कर दी और इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपगण्डा शुरु कर दिया कि यह तो ज़ुल्म है। नाइंसाफ़ी है, इंसानी हुक़ूक़ की ख़िलाफ़वर्ज़ी है। फ़ौरन इंसानी हुक़ूक़ की दुहाई दी जाने लगी। एक टी०वी० चैनल ने मुझ से इन्टरव्यु लिया। कुछ नाम के मुसलमान मर्दों और औरतों को उन्होंने पहले ही से बुला रखा था, जिन्होंने टी०वी० चैनल वालों ही के रटाए हुए जुमले दोहरा दिये कि यह सज़ा तो इंसानियत के ख़िलाफ़ है, यह तो बदले की भावना है, वग़ैरा-वग़ैरा। मैंने कहा कि क़ुरआन मजीद की आयत हैः ''हम ने तौरेत में लिख दिया है कि जान का बदला जान और आँख का बदला आँख और नाक का बदला नाक और कान का बदला कान और दाँत का बदला दाँत और ज़ख़्मों का बदला ज़ख़्मों से लिया जायेगा। अब कोई शख़्स माफ़ कर दे तो यह उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जायेगा और जो भी अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ काम करेगा वह ज़ालिमों में गिना जायेगा।'' (सूरह माएदा, आयतः 45)

इसी आयत से ही ईरान की इस्लामी अदालत ने हुक्म दिया है तो वह नक़ली मुसलमान मर्द और औरत (Anchor) के उसकाने पर फिर शोर मचाने लगे कि यह तो जंगल का क़ानून है, यह तो बदले की भावना है, मैंने फिर कहा कि जिन मुल्कों में सख़्त इस्लामी सज़ाएं है।, वहाँ जुर्मों की गिनती (Crimerate) बहुत कम है, मगर अमरीका जो इन्तेहाई मुहज़्ज़ब, तरक़्क़ीयाफ़्ता कहलाता है, जहाँ के लिए दावा है कि सबसे मुहज़्ज़ब लोग वहाँ रहते हैं, लेकिन देर रात वहाँ किसी की भी जान महफ़ूज़ नहीं समझी जाती है, इसलिए अमरीका में नए आने वालों को बताया जाता है कि अगर रात में निकलो तो कुछ डालर जेब में डाल लिया करो, क्योंकि अगर लूटने वालों ने तुम्हें ख़ाली हाथ पाया तो कहीं झल्लाकर तुम्हारी जान ही न ले लें। इसलिए जान बचाना है तो दो चार डालर पास होना ज़रूरी हैं। यह हाल है उस मुल्क का जो दुनिया का सबसे मुहज़्ज़ब मुल्क होने का दावा करता है, जो अपनी तहज़ीब को सारी दुनिया पर थोपना चाहता है। जुर्मों में बढ़ोत्तरी की वजह सज़ाओं में ढील है, जिसकी वजह से मुजरिम सख़्त हैं। मैंने सवाल किया कि आप सब ख़ुद फ़ैसला करके बताएं कि एक मुजरिम को सख़्त सज़ा देकर सैकड़ों की जान बचा लेना ज़्यादा बेहतर है या मुजरिमों के साथ नर्म सुलूक करके पूरे समाज को ख़तरे में डाल देना ज़्यादा

बेहतर है? मगर वहाँ तो मक़सद कुछ और था, इसलिए टी०वी० वालों के चुने हुए मुसलमान अपना ही राग अलापते रहे। आख़िर में, मैंने कहा कि अगर आँख के बदले आँख लेना ज़ुल्म व बरबरियत और बदले की भावना है तो जान के बदले जान लेना तो इस से भी बड़ा ज़ुल्म होगा? क्योंकि आँख की जगह पर आज कल दूसरी आँख लग सकती है, मगर जान वापस नहीं आ सकती। मुझे बताएं कि एक प्रधानमंत्री के क़त्ल के बदले में दो लोगों को फांसी दी गई तो क्या आप लोग इसको भी बदले की भावना कहकर मज़म्मत के लिए तैयार हैं? और क़साब को खुद फ़ांसी की सज़ा दी गई तो क्या आपकी नज़र में यह भी बदले की भावना है और क्या आप के ख़याल में क़साब को माफ़ कर देना चाहिए? जवाब में दूसरी तरफ़ मुकम्मल ख़ामोशी थी। बाद में मुझे मालूम हुआ कि टी०वी० चैनल ने मेरे इन जुमलों को नश्र ही नहीं किया।

क़ुरआन मजीद का एलान है, मतलबः "ऐ अक़्ल वालों तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है।" (सूरए बक़रा, आयत 179) इस्लाम ने क़िसास और सख़्त सज़ाओं का जो निज़ाम बनाया है, वह अद्लो इंसाफ़ के बिल्कुल मुताबिक़ है। इस्लाम ने एलान किया कि क़िसास में ज़िन्दगी का राज़ पोशीदा है। इस मुख़्तसर सी आयते करीमा में बेशुमार पहलू पोशीदा हैं। पहली बात तो यह है कि जिस समाज में ज़ालिमों को खुली आज़ादी हो और मज़लूमों का इंतेक़ाम न लिया जाए, वह निज़ाम मुर्दा ही कहलाएगा। दूसरा इंतेहाई अहम पहलू यह है कि समाज में कितनों की जानें बच जाएंगी। सख़्त सज़ा के ख़ौफ़ से कोई आसानी से किसी को क़त्ल करने का इरादा नहीं करेगा। इसी तरह से कितनी जानें बच जाएंगी, जो क़त्ल हो जाता उसकी जान बची। खुद क़त्ल का इरादा करने वाले की जान बची, क्योंकि बदल के इरादे से मक़तूल के वारिस उसे क़त्ल कर सकते थे। नतीजे में दो ख़ानदान तबाह होने से बच गए। यह भी मुमकिन है कि एक क़त्ल के जवाब में बदले का सिलसिला शुरु हो जाए और एक के बाद एक दर्जनों लोग मार दिये जाएं, जैसे कि कानपुर शहर की एक सड़क के दो ख़ानदानों की दुश्मनी बहुत मशहूर हुई, जिसमें पचासों दोनों तरफ़ से क़त्ल हो गए और दोनों ख़ानदानों को ऐसा नुक़सान पहुँचा जिसकी भरपाई मुमकिन नहीं। सख़्त सज़ाओं के नतीजे में ऐसे वाक़िआत पर रोक लग सकती है।

मैंने कहा कि जिन मुल्कों में इस्लाम की बनाई हुई सज़ाएं हैं, वहाँ जुर्मों की गिनती बहुत कम है। अब मैं सुबूत पेश करना चाहता हूँ। मैं तक़रीबन 13 साल ईरान के शहर क़ुम में रहा। क़ुम की आबादी मेरे रहने के ज़माने में तक़रीबन दस लाख थी, लेकिन आपको यक़ीनन सख़्त हैरत होगी कि इस 13 साल की मुद्दत में क़ुम में सिर्फ़ एक नौजवान का क़त्ल आपसी दुश्मनी की वजह से हुआ और सिर्फ़ एक डकैती का वाक़िआ हुआ जिसमें दो लोग मारे गए। ठीक एक महीने की मुद्दत में उस बाज़ार के चौराहे पर जहाँ डकैती पड़ी थी, उन डाकुओं और क़ातिलों को फांसी पर लटका दिया गया। इसके बाद से जब तक मैं क़ुम में रहा फिर किसी को डाका डालने की हिम्मत न हुई। यह था Crimerate एक दस लाख की आबादी वाले शहर में, इसी तरह से सऊदी अरब में क़त्ल का औसत एक लाख की आबादी पर सिर्फ़ एक का है, जबकि दक्षिणी अमरीका में एक लाख की आबादी पर 25 का है, उत्तरी अमरीका में क़त्ल के वाक़िआत का औसत एक लाख की आबादी पर 7 क़त्लों का है। यूरोप में यह औसत 6 का है, जबकि रूस में यह औसत 14 का है। हिन्दुस्तान में जुर्मों का औसत दिल हिला देने वाला है। हिन्दुस्तान के गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के हिसाब से 2009 में पूरे हिन्दुस्तान में एक साल की मुद्दत में 32369 क़त्ल के वाक़िआत दर्ज हुए। क़त्ल की कोशिश की गिनती 29038 थी, इस्मतदरी 20397, डकैती व लूट 27000, फ़साद के वाक़िए 62942, दहेज़ के लिए क़त्ल 8383।

(वेबसाइट मिन्स्ट्री ऑफ होम अफेयर्स)

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 23 सितम्बर 2011ई०)

(जारी)

हज़रत इमाम हुसैन(अ०) का अमर बलिदान

जनाब मुहम्मद हसन "शाहिद नक़वी", एम०ए० हिन्दी-रत्न (ग्वालियर)

परम शक्तिशाली ईश्वर ने मनुष्य को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बना कर भेजा, परन्तु जब इन्सान ने दुनिया में क़दम रखा और दुनिया का जायज़ा लिया... तो वह हैरान रह गया... पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियों, आकाश के असीम विस्तार और समुद्र की गहराइयों के बीच मनुष्य को अपना अस्तित्व बड़ा हीन सा लगा। हैरान व परेशान था कि वह किस प्रकार अपने आपको दुनिया में सर्वश्रेष्ट सिद्ध करे? तब ईश्वर ने मानो उससे कहा... "मैंने तुझे अक़्ल दी है... यदि तू अपनी बुद्धि का सही प्रयोग करता है... तो निश्चय ही तू अपने आपको दुनिया का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध कर सकेगा और तू सम्पूर्ण प्रकृति का स्वाही हो जायेगा।" और मनुष्य ने ऐसा ही किया। अपनी बुद्धि से नाना प्रकार के अविष्कार करके वह सारी प्रकृति को अपने अधिकार में कर बैठा। पहाड़ों को सूरमा बनाया, समुद्रों में तैरा और हवाओं में उड़कर आसमानी वस्तुओं को चुनौती देने लगा।

मनुष्य सारे संसार को अपने वश में कर सकता है, परन्तु अपने आप पर अधिकार करना उसके लिए बड़ा कठिन होता है। सारे संसार को अपने वश में कर लेने वाला मनुष्य भी -अपनी इन्द्रियों को- अपने नफ़्स को अपने अधिकार में कर सकने में अपने आपको विवश पाता है। इसलिए ईश्वर ने समय-समय पर अपने पैग़म्बरों को भेजा; ताकि वे सारी प्रकृति पर अधिकार करने वाले मनुष्य को अपने आप पर अधिकार करना सिखलाएं।

मनुष्य के अन्दर दो प्रकार की भावनाएं होती हैं। पहली स्वार्थ की भावना और दूसरी परहित की। इन्हीं दोनों भावनाओं की कशमकश में इंसान की ज़िन्दगी बीतती है। पैग़म्बर दुनिया में इसलिए आए कि वे मनुष्य को बताएं कि अपनी स्वार्थ भावना को दबाकर परहित की भावना को किस प्रकार वरीयता दी जाए। स्वयं कष्ट झेलकर दूसरों के कष्ट किस प्रकार हरे जाएं।

परन्तु आदम के साथ ही साथ शैतान भी दुनिया में आया। और शैतान यह सोचकर आया था कि वह इंसान के हर श्रेष्ठ कार्य में विध्न-बाधा उपस्थित करेगा। ऐसा नहीं हुआ कि शैतान दुनिया में अकेला रहा है। अगर आदम की औलादें हुईं और शैतान लावलद रहा तो शैतान ने आदम की औलाद में से कुछ को गुमराह करके अपना साथी बना लिया। आदम की वंश-वृद्धि के साथ-साथ शैतान के अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई और हर दौर में शैतान अपना एक शक्तिशाली संगठन बनाए रहा।

दुनिया में सुख और शांति स्थापित करने के लिए ईश्वर समय-समय पर पैग़म्बरों को भेजता रहा। और शैतान हर पैग़म्बर के सामने एक नये रूप में आता रहा। जो शैतान आदम को चुनौती देने के लिए शैतान के रूप में प्रकट हुआ था, वही शैतान 'हज़रत नूह' को परेशान करने के लिए उनकी उम्मत बनकर आ गया। वही शैतान "हज़रत इब्राहीम" के ज़माने में नमरूद बन कर आया, इसी शैतान ने "हज़रत मूसा" के ज़माने में "फ़िरऔन" की शक्ल इख़्तियार की। इसी शैतान ने "हज़रत यूसुफ़" के भाईयों के भेष में आकर उन्हें सरे बाज़ार नीलाम कर दिया। आख़िरी पैग़म्बर "हज़रत मुहम्मद" सहब के सामने यही शैतान "अबूजहल" के रूप में आया।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब की मृत्यु के पश्चात् अरब में वे तमाम बुराइयाँ

पुनः स्थापित होने लगीं जिनका अन्त करने के लिए इस्लाम का उदय हुआ था। उस समय तक शैतान अपना एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित कर चुका था और यज़ीद का रूप धारण करके अपने आपको मुसलमानों का ख़लीफ़ा कहने लगा था। यज़ीद ने तख़्त-ए-ख़िलाफ़त पर बैठकर अब तक आए हुए तमाम पैग़म्बरों का मिशन बेकार करने की योजना बना डाली। इसी योजना के अन्तर्गत हज़रत मुहम्मद साहब के तत्कालीन उत्तराधिकारी हज़रत इमाम हुसैन से अपनी अधीनता स्वीकार करने की बात कही। अधीनता न स्वीकार करने पर क़त्ल की धमकी देने लगा।

ठीक इसी तरह की धमकी मानव-इतिहास के प्रारम्भ में हज़रत आदम के अयोग्य और घमण्डी पुत्र क़ाबील ने अपने योग्य और विनम्र भाई हज़रत हाबील को देते हुए कहा था- "तुम हमारे रास्ते से हट जाओ, यदि तुमने ईश्वर की अराधना की और तुम्हारी आराधना स्वीकार हो गई तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूँगा।" हज़रत हाबील क़त्ल कर दिये गए परन्तु अपने सत्य के रास्ते से विचलित नहीं हुए। अब यही धमकी यज़ीद हज़रत इमाम हुसैन को दे रहा था। मानो शैतान आदम से कह रहा था- 'तुम मेरी अधीनता स्वीकार करो"।

यज़ीद कौन था? अत्याचार, अन्याय, असमानता और उत्पीड़न का प्रतीक और हज़रत इमाम हुसैन उन तमाम पैग़म्बरों के उत्तराधिकारी थे जो हज़रत आदम से लेकर अब तक दुनिया से अत्याचार, अन्याय, असमानता, और उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए आए थे।

हज़रत इमाम हुसैन का यज़ीद की अधीनता स्वीकार कर लेने का अभिप्राय होता उन तमाम मानव-विरोधी शक्तियों को मान्यता प्रदान कर देना जो दुनिया में अत्याचार, अन्याय, असमानता एवं उत्पीड़न फैलाती हैं। अतः मानवता के महान् रक्षक तथा सत्य और अहिंसा के पुजारी हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की अधीनता स्वीकार करने से स्पष्ट इनकार करते हुए कहा- "चाहे हमें कितना ही बड़ा बलिदान क्यों न देना पड़े, हम मानव-विरोधी शक्तियों के आगे सर नहीं झुकायेंगे।" यह वही उत्तर था जो मानव इतिहास के प्रारम्भ में हज़रत हाबील ने अपने अत्याचारी भाई क़ाबील को दिया था।

मानवता के गौरव हज़रत इमाम हुसैन के इस एतिहासिक उत्तर ने मानवता का सर हमेशा-हमेशा के लिए बलन्द कर दिया और ज़ुल्म व जोर को झुका दिया। परन्तु हज़रत इमाम हुसैन के इस एतिहासिक उत्तर ने वक़्त के तेवर बदल दिये और हक़ की इस आवाज़ को दबाने के लिए कर्बला के एतिहासिक मैदान में सारी मानव विरोधी शक्तियाँ सिमट कर आ गईं। कश्मीरी शायर हज़रत ख़िज़्र बर्नी ने ठीक ही कहा हैः-

"जब भी किसी ने हक़ की सदाएं बुलन्द कीं।
देखा गया है वक़्त के तेवर बदल गऐ।"

हज़रत इमाम हुसैन भी इन मानव-विरोधी शक्तियों का मुक़ाबला करने के लिए कर्बला के मैदान में आए लेकिन फ़ौज लेकर नहीं। मानवता ने फ़ौज का सहारा कभी नहीं लिया। हज़रत इमाम हुसैन ने हथियार नहीं जमा किये, जो अहिंसा और आत्म शक्ति पर विश्वास रखते हैं वे हथियारों का सहारा नहीं लिया करते। हज़रत इमाम हुसैन अपने अज़ीज़ों और दोस्तों में केवल बहत्तर लोगों को लेकर आये, जिनमें बूढ़े भी थे जवान भी थे, औरतें भी थीं और बच्चे भी थे। हर उम्र और हर आयु का एक-एक नुमाइन्दा था- हज़रत इमाम हुसैन के साथ। अगर बूढ़े हज़रत "हबीब इब्ने मज़ाहिर" थे, तो छः माह का दूध पीता "अली असग़र" भी था। लेकिन हर एक का अज़्म वही था जो इमाम हुसैन का। इसलिए कहना चाहूँगा कि कर्बला में एक नहीं बहत्तर हुसैन थे। हुसैन के गिरोह का हर फ़र्द हुसैन था और हर एक सत्य और अहिंसा का पुजारी मानवता की रक्षा के लिए बड़ा से बड़ा बलिदान देने को तैयार था।

यज़ीदी फ़ौज ने इमाम हुसैन के इस छोटे से परिवार को कर्बला के रेगिस्तान में चारो ओर से घेर लिया। उन पर तरह-तरह के अत्याचार ढाये जाने लगे। जिन पर पानी तक बन्द कर दिया गया। छोटे-छोटे बच्चे प्यास से बिलकने लगे। कर्बला के रेगिस्तान में हज़रत हुसैन के छोटे से परिवार पर मुसीबतों के पहाड़ टूटने लगे। लेकिन जहाँ अज़्म की पुख़्तगी हो, हौसले बलन्द हों,

रूहें पाक हों, इरादे नेक हों, वहाँ मुसीबतों के पहाड़ भी नहीं टिक सकते। यह इरादे की पवित्रता ही थी हज़रत इमाम हुसैन के एक बच्चे तक ने भी यज़ीदी लश्कर की शान व शौकत की तरफ़ देखा नहीं। और यह यज़ीदी मिशन में रूहानियत की कमी ही थी कि "हुर" जैसा बहादुर सिपहसालार यज़ीदी लश्कर से निकल कर हज़रत इमाम हुसैन के गिरोह में शामिल हो गया। वास्तव में यहीं पर हज़रत इमाम हुसैन को तारीख़ी फतेह मिल गई थी। इसके बाद जो कुछ हुआ वह यज़ीदी फ़ौज की बौखलाहट और दरिंदगी ही थी।

हज़रत इमाम हुसैन के सारे साथी भूखे-प्यासे शहीद कर दिये गये उनके खेमों में आग लगा दी गई। औरतों को क़ैद करके कूफ़े और शाम के बाज़ारों में नंगे सर घुमाया गया और उन पर मुसीबतों के वह पहाड़ तोड़े गए जिनकी कल्पना मात्र से ही मानवता का सर झुक जाता है, इन्सानियत कांप उठती है, दिल दहलने लगता है और बेसाख़्ता आंखें बन्द कर लेने को जी चाहता है।

यह सब कुछ हुआ, परन्तु मानवता के रक्षक हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की अधीनता न स्वीकार की और न अत्याचार के आगे सर झुकाया।

कर्बला में हज़रत इमाम हुसैन मानव अधिकारों के लिए लड़े थे। उन्होंने अपनी तथा अपने परिवार की कुर्बानी सम्पूर्ण मानवता के रक्षार्थ दी थी।

कर्बला की यह घटना सन् 61 हिजरी के मोहर्रम नामक महीने में घटी थी। अतः प्रत्येक वर्ष मोहर्रम के महीने में इस कुबानी की याद मनाई जाती है और इस पर्व को मोहर्रम के नाम से पुकारते हैं। मोहर्रम का पर्व निरन्तर दस दिन तक मनाया जाता है। यह एक ग़म का त्योहार है, जिसमें हज़रत इमाम हुसैन की कुर्बानी की याद ताज़ा हो जाती है। शिया सम्प्रदाय के लोग तथा इमाम हुसैन के मानने वाले अन्य लोग दस दिन तक शोक मनाते हैं। काले कपड़े पहनते हैं और ख़ुशी का कोई काम नहीं किया जाता। दस दिन तक स्थान-स्थान पर इमामबाड़ों में मजलिसें होती हैं, जिसमें इमाम हुसैन की कुर्बानी से सम्बन्धित भाषण होते हैं। नौहे और मर्सिये पढ़े जाते हैं। जगह-जगह पर हज़रत इमाम हुसैन की समाधि के प्रतीक "ताज़िये" रखे जाते हैं। जिन पर हर जाति के लोग प्रसाद और फूल मालाएं चढ़ाकर हज़रत इमाम हुसैन को श्रृदांजलि आर्पित करते हैं। इन ताज़ियों के जुलूस भी निकाले जाते हैं, जिनको "गश्त" कहते हैं। हज़रत इमाम हुसैन की स्मृति में लंगर लुटाकर एवं नज़रें दिलाकर भूखों को खाना खिलाया जाता है और सबील रखकर प्यासों को शर्बत और पानी पिलाया जाता है।

मोहर्रम के दसवें दिन को "यौमे आशूर" कहते हैं। जिस दिन मजलिसों एवं जुलूस के विशेष कार्यक्रमों से मोहर्रम पर्व का समापन होता है।

केवल शिया या इस्लाम धर्म के अनुयायी ही नहीं- मोहर्रम एक महान् राष्ट्रीय पर्व है, जिसे दुनिया की हर जाति हर क़ौम के लोग मनाते हैं। दुनिया का ऐसा कोई कोना नहीं, जहाँ मोहर्रम के दिनों में मानवता के अमर बलिदानी हज़रत इमाम हुसैन की याद न मनाई जाती हो। संसार के हर गोशे में हज़रत इमाम हुसैन का मातम होता है।

और क्यों न हो? मानवता के गौरव सत्य अहिंसा और शांति के अमरदूत हज़रत इमाम हुसैन ने कर्बला के मैदान में अपनी तथा अपने अज़ीज़ों की महान और लासानी कुर्बानी देकर सिर्फ़ इस्लाम की ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता की रक्षा की थी। पूरी दुनिया-ए-इंसानियत पर एहसान किया था।

हज़रत इमाम हुसैन मज़हब या सल्तनत के लिए नहीं, मानव अधिकारों के लिए लड़े थे। हज़रत इमाम हुसैन दुनिया के हर कोने के, हर समय के उन तमाम लोगों की तरफ़ से लड़े थे, जिन्हें मानव अधिकारों से वंचित किया जाता है जो कुचले जाते हैं, जो दबाये जाते हैं और जिन पर बेगुनाह ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े जाते हैं।

हज़रत इमाम हुसैन की आवाज़ साम्राज्यवादी शक्तियों और हर दौर की तानाशाही हुकूमतों के ख़िलाफ़ एक ताक़तवर आवाज़ थी। हज़रत इमाम हुसैन की कुर्बानी दुनिया के फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ एक अजीब व ग़रीब आवाज़ थी।

(मु० 1395 हि० /जनवरी 1975 ई० इमामिया मिशन, लखनऊ)

ईदे ग़दीर

बिन्ते ज़हरा नक़वी 'नदल हिन्दी'

सुन चुके हैं लोग पैग़ामे ग़दीर
चल रहे हैं बज़्म में जामे ग़दीर
क्या अजब हैं सुबह और शामे ग़दीर
रौनक़े आलम हैं अय्यामे ग़दीर
मा हसल तबलीग़ का पूरा हुआ
आज कल है दीन, इस्लामे ग़दीर
अर्श रुतबा, फ़र्श पर बैठे हैं आज
कम से कम इतना है इकरामे ग़दीर
हर तरफ़ सुनते हैं बख़्ख़िन की सदा
हैं ज़बानें ज़ेरे अहकामे ग़दीर
ले चले हुज्जाज बहरे अक़रेबा
तोहफ़-ए-तबरीको पैग़ामे ग़दीर
मन्ज़िले अनवार है मदफ़न, 'नदा'
मरते ही पाया ये इनामे ग़दीर

मद्हे इमामे रिज़ा

कौन आया ये क्यों ख़ुशी है बहुत
क्या मदीने में रौशनी है बहुत
एक अली[अ०] आ गया अली[अ०] के घर
ये ख़बर आम हो गई है बहुत
देख कर ख़ान-ए-अली[अ०] में ख़ुशी
काबतुल्लाह को ख़ुशी है बहुत
चाँद काज़िम के घर में उतरा है
इसलिए आज चाँदनी है बहुत
बे-अमल को घड़ी की क़द्र नहीं
बा-अमल को घड़ी-घड़ी है बहुत
इस जहाँ में ख़ुदारसी के लिए
सच यही है कि ख़ुदरसी है बहुत
वादि-ए-मदह में पड़े हैं हुज़ूर
लग रहा है कि आज पी है बहुत
चलिए-चलिए रज़ा[अ०] की चौखट पर
इल्मो इरफ़ाँ की तश्नगी है बहुत
उनका एहसान कल भी था बेहद
उनका एहसान आज भी है बहुत
हम को जन्नत की फ़िक्र कुछ भी नहीं
हम को मौला तेरी गली है बहुत
बुलबुले गुलशने मनाक़िब हूँ
मुझको बस गुलशने अली[अ०] है बहुत
वक़्त की क़द्र जान लो जो 'नदा'
चार दिन की ये ज़िन्दगी है बहुत

मुख्य समाचार

क़ाएदे मिल्लत की सरपरस्ती में नरेन्द्र मोदी के ख़िलाफ़ एहतेजाज

मुल्क से दहशतगर्दी के ख़ात्मे के लिए आसफ़ी इमामबाड़े में वृत और रोज़ा इफ़्तार का एहतेमाम

गुजरात में हज़ारों मुसलमानों के क़त्ल के ज़िम्मेदार नरेन्द्र मोदी से इंसानियत को नजात दिलाने की दुआओं के दरमियान कसीर तादाद में हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई फ़िरक़े के



मुतादि्दद अफ़राद ने रोज़ा और वृत रखा। क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद की अपील पर 23 सितम्बर 2011ई० को स्वामी अग्निवेश समेत तमाम मज़ाहिब के मोअज़्ज़ अफ़राद इमाम बाड़ा आसफ़ी में जमा हुए। रोज़ा इफ़्तार और वृत के बाद मुल्क और दुनिया में अम्नो सलामती नीज़ मोदी जैसे तमाम ज़ालिमों से दुनिया-ए-इंसानियत को नजात दिलाने के लिए दुआएं कीं।

इस मौक़े पर क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी इमामे जुमा लखनऊ ने अपनी इफ़्तेताही तक़रीर में फ़रमाया कि गुजरात दंगे के असल ज़िम्मेदार नरेन्द्र मोदी को दुनिया की अदालत ने तो बरी कर दिया है मगर अल्लाह की अदालत मोदी को ज़रूर सज़ा देगी। क़ाएदे मिल्लत ने दौराने तक़रीर क़ुरआने हकीम की आयतों का हवाला दिया जिनमें इरशाद हुआ है कि अल्लाह ज़ालिम को उसके गुनाह की सज़ा ज़रूर देता है। इस से दो तीन रोज़ क़ब्ल क़ाएदे मिल्लत ने वाज़ेह तौर पर यह भी फ़रमाया कि मोदी गुजरात के क़साब हैं।

स्वामी अग्निवेश ने नरेन्द्र मोदी के हालिया तीन रोज़ा वृत को ड्रामा क़रार देते हुए कहा कि गुजरात के वज़ीरे आला सधभावना मिशन के ज़रिए मुल्क का वज़ीरे आज़म बनने का ख़्वाब देख रहे हैं लेकिन मुल्क के अमन पसंद शहरी उनके बहकावे में नहीं आएंगे और उनका यह ख़्वाब कभी सच नहीं होगा। मुसलमानों के क़त्ले आम के बाद सदाभावना मिशन के नाटक से उनके गुनाह नहीं धुलेंगे। सुप्रीमकोर्ट के हालिया फैसले का ज़िक्र करते हुए स्वमी अग्निवेश ने कहा कि मोदी इस से ग़लतफ़हमी में मुब्तला न हों। बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनाएगी।

मोदी गुजरात फ़सादात के लिए पूरी तरह ज़िम्मेदार हैं और यह सच्चाई बहुत जल्दी दुनिया के सामने आ जायगी। उन्होंने कहा कि ऐसे सियासतदाँ अपने फ़ायदों की ख़ातिर हिन्दू और मुसलमानों को लड़ाकर अपनी सियासी रोटियाँ सेकते हैं। ऐसे लोगों के ख़िलाफ़ तमाम अम्न पसन्द शहरियों को एकजुट होना चाहिए ताकि वह अपने इरादों में कामयाब न हो सकें। उन्होंने ३ लाख कशमीरी पण्डितों को बेघर करने, 1984 में हज़ारों सिखों के क़त्लेआम और उड़ीसा में ईसाईयों पर मज़ालिम की भी सख़्त मज़म्मत की। क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद ने कहा कि आज तमाम मज़ाहिब की मुअज़्ज़ज़ हस्तियाँ यहाँ इसलिए



जमा हुई हैं ताकि मोदी जैसे ज़ालिमों से इंसानियत को नजात मिले, दहशतगर्दी का ख़ात्मा हो मुल्क में अमन क़ायम हो। मोदी के सिलसिले में सुप्रीमकोर्ट के हालिया फैसले पर तब्सेरा करते हुए क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि दुनिया की कोई भी अदालत मोदी को उनके गुनाहों की सज़ा देने से क़ासिर है क्योंकि अदालतों के फ़ैसले सुबूतों की बुनियाद पर होते हैं। और सुबूतों को मिटाया जा चुका है। इसलिए मोदी को सज़ा देने के लिए किसी सुबूत की ज़रूरत नहीं है।

जलसे को ख़िताब करते हुए क्राइस चर्च कालेज के प्रिंसपल राकेश क्षत्रीय ने मोदी के वृत को अवाम से धोकेबाज़ी क़रार देते हुए कहा कि अम्न पसंद शहरी इन हरकतों और वृत के पीछे छुपे मक़सद को बख़ूबी समझते हैं। मोदी के वृत के मौक़े पर गुजरात फ़सादात के मुतास्सिरीन में से कोई भी मौजूद नहीं था जो उनके मिशन की क़लई खोलने के लिए काफ़ी है। क़ाएदे मिल्लत के इक़दाम की तारीफ़ करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसा पहली मरतबा हुआ है कि किसी मुहिम में शख़सियत के बजाए ख़ुदा को आगे किया गया हो। लेहाज़ा हमें इस मक़सद में कामयाबी ज़रूर मिलेगी। प्रमोद कृष्ण्न ने अपने ख़िताब में कहा कि मोदी ने वृत के ज़रिए ख़ुद को भगवान दिखाने की कोशिश की लेकिन उन्हें समझ लेना चाहिए कि हिन्दू किसी पार्टी के मोहताज या उसकी बपौती नहीं हैं। उनके वृत से सधभावना के बजाए ग़ुरूर की बू आती है। उन्होंने मज़हब के नाम पर सियासत करने वालों को अपनी हरकतों से बाज़ आने की तलक़ीन की।

राकेश नाथ, जुगल किशोर और दीगर मुक़र्रिरीन ने क़ाएदे मिल्लत की इस तहरीक की तारीफ़ करते हुए कहा कि ऐसे प्रोग्राम मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में भी मुनअक़िद होने चाहिए ताकि ज़ालिम ताक़तों को बेनक़ाब किया जा सके। प्रोग्राम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने वालों में मौलाना फ़ीरोज़ हुसैन, मौलाना रज़ा हुसैन, मौलाना अमीर हैदर, मौलाना इल्मुल हसन, और मौलाना तसनीम महदी साहेबान व दीगर उलमा के अलावा दीगर मज़ाहिब के रहनुमा अचार्य प्रमोद कृष्ण्न (सदर अखिल भारतीय संत समिति, देहली) वाई०के० शास्त्री अयोध्या, अचार्य जुगल किशोर अयोध्या, राकेश खत्री (फ़ादर क्राइस चर्च), जगदीश सिंह जाचू, डाक्टर गुरमीत सिंह, दिनेश चौधरी दीनू (सदर हिन्दू मुस्लिम एकता समिति) मोहतरमा निर्मला वाल्टर (समाज सेवी), संजोग वाल्टर (सहाफ़ी), मौलाना वारिस अली बशीरी, सूफ़ी मुहम्मद मुईन मियाँ, सूफ़ी फरहत मियाँ (मुन्तज़िम दादा मियाँ मज़ार), क़ारी महमूद अहमद वग़ैरा ने भी रोज़ा और वृत रखा। तक़ारीर के बाद उलमा महन्तों और दीगर अहम शख़सियतों के साथ कसीर तादाद में हाज़िरीन ने रोज़ा इफ़्तार किया और वृत तोड़ा।

रहबरे मुअज़्ज़म आयतुल्लाह ख़ामेना-ई ने अवामी अरब तहरीकों को यूरोप पर भरोसा करने से रोका

ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह सै० अली ख़ामेना-ई ने अवामी अरब तहरीकों के ज़िम्मेदारों को तम्बीह की है कि वह मग़रिबी ताक़तों और उनके वादों पर भरोसा न करें बल्कि अपने मसाएल के हल के लिए इस्लाम से रुजू करें। उन्होंने यह बात तेहरान में इस्लामी बेदारी के मौज़ू पर मुनअक़िदा दो रोज़ा कान्फ्रेंस के इफ़्तेताही इजलास को ख़िताब करते हुए कही है। उन्होंने कहा कि ''कभी अमरीका, नेटो और बरतानिया, फ्रांस और इटली की जराएम पेशा हुकूमतों पर एतेबार न करें जो पहले ही आप की सरज़मीनों को आपके दरमियान तक़सीम करके लूटते रहे हैं।''

आयतुल्लाह ख़ामेना-ई ने कहा कि ''अहले मग़रिब के बारे में शुब्हे में रहें और उनकी मुस्कुराहटों पर एतेबार न करें। उनकी मुस्कुराहटों और वादों के पीछे झूठ, साज़िश और फ़रेब कारफ़रमा है। अपने मसाएल के हल के लिए इस्लाम से रुजू करें।'' ईरान के सरकारी टेलीवीज़न पर प्रसारित की गई तक़रीर में रहबरे मुअज़्ज़म ने कहा कि ''अपने दुश्मनों को इस बात की इजाज़त न दें कि वह आपको मुस्तक़बिल के मंसूबे डिक्टेट कराएं। आरज़ी मफ़ादात के लिए इस्लाम के सुनहरे और पाएदार उसूलों को क़ुर्बान न करें।''

शिया ज़ाएरीन के क़ाफ़ले पर हमला, 29 जाँबहक़

सूबा ब्लोचिस्तान के शहर मस्तोंग में शिया ज़ाएरीन की बस पर मुसल्लेह अफ़राद की अंधाधुंध फ़ायरिंग से 29 अफ़राद जाँबहक़ और मुतादि्दद ज़ख़्मी हो गए हैं। नामा निगारों के मुताबिक़ यह बस ज़ाएरीन को लेकर ईरान जा रही थी कि शाम के वक़्त मुस्तोंग के इलाक़े गंजडोरी में नामालूम अफ़राद ने बस पर फ़ायरिंग शुरु कर दी।

ज़ख़्मियों को कोएटा के मुख़्तलिफ़ अस्पतालों में तिब्बी इमदाद दी जा रही है। पुलिस के मुताबिक़ मुसल्लह अफ़राद ने ईरान जाने वाले शिया ज़ाएरीन की बस पर चारों अतराफ़ से फ़ायरिंग शुरु कर दी। बस में पचास अफ़राद सवार थे। मुस्तोंग के एक पुलिस अहलकार ने ख़बररसाँ इदारे राइटर को बताया कि पहले मुसल्लह अफ़राद ने बस पर चारों तरफ़ से फ़ायरिंग की और उसके बाद बस के अंदर घुस गए। मुसल्लह अफ़राद ने ज़ाएरीन को अस्पताल जाने वाली एम्बुलेंस पर भी फ़ायरिंग की जिस से तीन अफ़राद हलाक हो गए। हुक्काम के मुताबिक़ अभी ऐसी कोई गवाही नहीं मिली है जिस से यह साबित होता कि हमला आवर का ताल्लुक़ किस शिद्दत पसंद तंज़ीम से है।

क़ाएदे मिल्लत की सरपरस्ती में कर्बला मोतमदुद्दौला की वागुज़ारी के लिए एहतेजाज

वक़्फ़ कर्बला-ए-मोतमदुद्दौला की अमलाक यहूदियों के ख़ुफ़िया गरोह फ्री-मेसून के नाजाएज़ क़ब्ज़े और यहाँ से तंज़ीम की मुसलमानों के ख़िलाफ़ जारी सरगर्मियों के ख़िलाफ़ 13 सितम्बर को बड़ी तादाद में उलमा और अवाम ने ज़बरदस्त एहतेजाज किया।



मौलाना कल्बे जवाद की सरबराही में लोग जुलूस की शक्ल में वक़्फ़ कर्बलाए मुतमदुद्दौला की तरफ़ रवाना हुए। जुलूस में शामिल लोग कर्बला की वागुज़ारी के साथ-साथ नार-ए-तकबीर और नार-ए-हैदरी के नारे लगा रहे थे। मौक़े पर पहुँचने के बाद मौलाना कल्बे जवाद ने मुज़ाहेरीन और नामानिगारों से ख़िताब किया। मौलाना कल्बे जवाद ने इस मौक़े पर अपने ख़िताब में कहा कि कर्बला-ए-मोतमुद्दौला में हमारे दो इमामों के रौज़ों की शबीह है लेकिन बड़े अफ़सोस का मक़ाम है कि इन मुक़द्दस मक़ाम पर यहूदियों की ख़ुफ़िया तंज़ीम फ्री-मेसून न सिर्फ़ नाजाएज़ तौर पर क़ाबिज़ है बल्कि मुल्क और मुसलमानों के ख़िलाफ़ सरगर्मियों में मसरूफ़ है। मौलाना ने आगाह किया कि सरकार और प्रशासन भले ही मुल्क के ख़िलाफ़ मज़कूरा तंज़ीम की साज़िशें बर्दाश्त कर ले लेकिन हम इसे किसी क़ीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे। क़ाएदे मिल्लत ने हुकूमत से मुतालबा किया कि एक महीने में कर्बला की अमलाक को फ्री-मेसून के क़ब्ज़े से ख़ाली करके क़ौम के हवाले किया जाए ताकि यहाँ अज़ादारी और ताज़ियादारी का सिलसिला दोबारा शुरु किया जा सके।

क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि अग्रेज़ों ने पहली जंगे आज़ादी में शिरकत करने वाले हिन्दुओं और मुसलमानों को सज़ा देने के लिए उनके मज़हबी मक़ाम, मसाजिदों और इमामबाड़ों वग़ैरा पर क़ब्ज़ा करके उन्हें नुज़ूल में डाल दिया। उन्होंने कहा कि जो सुलूक अंग्रेज़ों ने मुजाहिदीने आज़ादी के साथ किया आज़ादी के बाद मुल्क की मौजूदा व साबिक़ा हुकूमतों ने उनके साथ वही सुलूक जारी रखा जो क़तई मुनासिब नहीं। लेहाज़ा जिन इमामबाड़ों, मस्जिदों और औक़ाफ़ को नुज़ूल में दर्ज किया गया है उन्हें वापस किया जाए।

